ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-1* April-2021
Anthology : The Research

भारत में बौद्ध धर्म का विघटनः ऐतिहासिक दृष्टिकोण
Disintegration of Buddhism in India: Historical Perspectives

Paper Submission: 06/04/2021, Date of Acceptance: 17/04/2021, Date of Publication: 19/04/2021

पिंकी यादव
सह आचार्य,
इतिहास विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

भारत में बौद्ध धर्म का उदय ईसा पूर्व 6वीं शताब्दी में हुआ और तब से यह भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक अभिन्न अंग बन गया है। वर्षों से, सम्पूर्ण भारत में हिन्दु और बौद्ध संस्कृतियों का एक अद्भुत मिलन होता आया है और भारत के आर्थिक उदय और सांस्कृतिक प्रभुत्व में बौद्धों ने महती भूमिका निभाई है। बौद्ध धर्म का विघटन के लिए किसी एक कारण को उत्तरदायी नहीं माना जा सकता, इसके लिए समय–समय पर उपस्थित विभिन्न परिस्थितियाँ उत्तरदायी थी। जिसके कारण बौद्ध धर्म का प्रभाव भारत से शनैः शनैः कम होने लगा। जिसके कारण बौद्ध धर्म का प्रभाव भारत से शनैः शनैः कम होने लगा। इनमें प्रमुख थी परम्परागत रूप से आ रही ब्राह्मण–व्यवस्था का बुद्ध द्वारा विरोध। जिसके कारण यह धर्म भारत में पैर नहीं जमा सका। बुद्ध के काल में इस धर्म को अभूतपूर्व सफलता इसलिए मिली कि उनके उपदेश और सिद्धान्त अत्यंत सरल और सुगम थे तथा पीड़ित जनता के लिए अत्यधिक आकर्षक। धर्म के नैतिक और व्यावहारिक आचारों में क्लिष्टता नहीं थी। किन्तु उनकी मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म में दुरूहता और जटिलता आती गई, जिससे साधारण वर्ग को कठिनाइयों का अनुभव हुआ। कालान्तर में हिन्दू धर्म के सरल और सुबोध आचरण के कारण भी बौद्ध धर्म बहुत पीछे रह गया। फलतः बौद्ध धर्म का ह्रास स्वतः प्रारम्भ हो गया जो कालान्तर में चलकर और त्वरित गति से हुआ।

The rise of Buddhism in India was in 6th century BC and has since become an integral part of India's cultural and religious heritage. Over the years, there has been a wonderful union of Hindu and Buddhist cultures across India and Buddhists have played a major role in India's economic rise and cultural dominance. No single reason can be considered responsible for the disintegration of Buddhism, Various circumstances present from time to time were responsible for this. Due to which the influence of Buddhism started decreasing from India. Chief among these was the opposition of the traditional Brahmin system to the Buddha. Due to which this religion could not set foot in India. This religion met with unprecedented success during Buddha's era because his teachings and doctrines were very simple and accessible and highly attractive to the suffering masses. There was no obsolescence in the moral and practical ethos of religion. But after his death, Buddhism grew in complexity, due to which the ordinary class experienced difficulties. Later, due to the simple and understandable conduct of Hinduism, Buddhism remained far behind. As a result, the decline of Buddhism started automatically, which took place over a period of time and at a rapid pace.

मुख्य शब्द : बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म, नैतिक और व्यावहारिक आचार।
Buddhism, Hinduism, Moral and Practical Ethos.

प्रस्तावना

बौद्ध धर्म के पतन को लेकर आधुनिक विद्वानों में इतना मतभेद है कि यदि एक ओर कुछ विद्वानों ने पतन के आरम्भ को बुद्ध के ही काल में रखा है [1] तो वही दूसरी ओर कुछ अन्य विद्वानों के विचार में पतन के आरम्भ को सातवीं शताब्दी से पहले नहीं रखा जा सकता। [2] जहाँ कुछ विद्वानों ने बौद्ध धर्म के पतन को 'केवल वार्द्धव्य या पूर्ण परिक्लानित' [3] के संदर्भ में व्यक्त किया है, वहीं दूसरे विद्वान यह अनुभव करते हैं कि पतन के पीछे उन विभिन्न कारणों की

विविधता थी जो निस्संदेह बड़े लम्बे समय से कार्य कर रहे होंगे।[4] तथापि, इस बात पर आम सहमति है कि पतन के आरम्भ का समय जो भी रहा हो, 12वीं शताब्दी के अन्त के करीब यह बड़ी तीव्रता और व्यापक रूप से घटित हुआ। पांचवीं शती के प्रथम चरण में फाँहियान को बौद्ध धर्म अपनी उत्कर्षावस्था में दिखाई पड़ा था, किन्तु सातवीं शती के पूर्वार्ध में युवांच्वांग (ह्वेन–सांग) की दृष्टि में वह अवनति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा था। आठवीं शती के आरम्भ में बौद्ध धर्म की अधिक अवनति हो चुकी थी, जैसा कि इत्सिंग का अभिवचन हैं।

भारत में बौद्ध धर्म का विघटन

प्रो. के.डब्ल्यू मार्गन जैसे हाल के लेखकों का कथन है कि बौद्ध धर्म के अपकर्ष के कारण थे–संघ की शक्ति का ह्रास, मुस्लिम आक्रमण एवं हिन्दू जनता का विरोध। श्री ए. कुमारस्वामी के इस कथन में पर्याप्त सत्यता प्रतीत होती है कि बौद्ध धर्म एवं ब्राह्मण धर्म का जितना गम्भीर अध्ययन किया जाए उतना ही दोनों के बीच अन्तर जानना कठिन हो जाता है या यह कहना कठिन हो जाता है कि किन रूपों में बौद्ध धर्म, वास्तव में अशास्त्रीय या अहिन्दू है। बुद्ध एवं उनके उत्तराधिकारी अनुयायियों ने ब्राह्मण धर्म की कुछ लोक प्रचलित मान्यताओं पर ही आक्रमण किया था। राइज डेविड्स महोदय[5] ने अपने 'दि रिलेशन बिटवीन अर्ली बुद्धिज्म एवं ब्राह्मणीज्म' नामक भाषण में यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया है कि त्रिपिटकों से यह नहीं प्रकट होता है कि उनका ब्राह्मणों से कोई विरोध था और बुद्ध ने वही कहा जो उन दिनों के ब्राह्मणवाद के प्रमुख तत्वों में विद्यमान थे। बुद्ध ने उपनिषदों की उस शिक्षा को स्वीकार किया कि ब्रह्मानन्द एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए नैतिक आचरण अति उच्च होना चाहिए।

कुछ विद्वानों ने शासकीय उत्पीड़न को मुख्य कारणों में एक कारण माना है। [6] शुँगवंश के पुष्यमित्र पर ऐसा अभियोग लगाया गया है, उसने ऐसी उद्घोषणा की थी कि जो कोई किसी श्रवण का सिर लायेगा वह एक सौ दीनार पायेगा। कश्मीर के राजा मिहिर कुल को युवाँच्वाँग (अथवा ह्वेनसांग जैसे कुछ विद्वान लिखते हैं) ने उत्पीड़क कहा है और लिखा है कि उसने गंधार में बौद्ध स्तूपों को गिरा दिया, उसने मठों एवं सैकड़ों बौद्धों को मार डाला। युवाँच्वाँग ने लिखा है कि राजा शशांक ने बोधिवृक्ष का उच्छेद कर दिया, बुद्ध प्रतिमा के स्थान पर महेश्वर की प्रतिमा रख दी तथा बुद्ध के धर्म का नाश किया, कुमारिल के कहने पर राजा सुधन्वा ने एक अनुशासन निकाला कि हिमालय से लेकर कुमारी–अन्तरीप तक (जो सर्वथा असंगत है) अपने उस नौकर को, जो बौद्धों की हत्या नहीं करेगा, मार डालूंगा।[7]

कुछ विद्वान संघ के अन्दर के भेद और विवादों को पतन का कारण मानते हैं। 7वीं शताब्दी तक बौद्ध धर्म एक विभाजित घर जैसा बन चुका था। संघ–भेद को स्वयं बुद्ध ने पाँच मुख्य पापों में से एक माना था। बौद्धों के विभिन्न सम्प्रदाय आपस में उसी तरह लड़ते थे जिस तरह बौद्धेतर लोगों से लड़ते थे। चार्ल्स ऐलियट यह अनुभव करते है कि ''हीनयान की अपेक्षा महायान के भ्रष्टाचारों के कारण बौद्ध धर्म का भारत में पतन हुआ।''[8]

कुछ विद्वान यह समझते हैं कि मुस्लिम आक्रमण बौद्ध धर्म के भारत की मुख्य भूमि से विलुप्त होने का मुख्य कारण थे। लगभग 1200 ई. में एवं उसके उपरान्त नालंदा एवं विक्रमशीला जैसे विश्वविद्यालय नष्ट कर डाले गये। बोधगया को भी तोड़ा–फोड़ा गया और अधिक संख्या में निर्दयतापूर्वक भिक्षु मार डाले गये। जो लोग इस प्रकार के संहार से बच गये वे तिब्बत या नेपाल में भाग गये।[9] जहाँ बख्त्यिार खिलजी के अत्याचार का वर्णन है, जो तबाकत–ए–नासिरी से लिया गया है। उसमें लिखा है कि बख्तियार खिलजी अपनी सेना लेकर बिहार गया और वहाँ लूटपाट की, उसके हाथ में प्रभूत सम्पत्ति पड़ी, वहाँ के निवासी अधिकतर ब्राह्मण थे, जिनकी सिर मुण्डित थे, वे मार डाले गये, बहुत सी पुस्तकें पायी गयी और ऐसा माना गया कि सम्पूर्ण स्थान एक अध्ययन का नगर था। इस वर्णन से प्रकट होता है कि मुण्डित सिर ब्राह्मण बौद्ध भिक्षु थे। जब 1325 ई. में पुनः नालन्दा पर आक्रमण हुआ तो इसके 70 छात्र असहाय और बूढ़े आचार्य राहुलभट्ट को छोड़कर भाग खड़े हुए। धर्मस्वामिन ने इस बूढ़े भिक्षु को अपने कंधे पर रखकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। बौद्ध संस्थानों को लूटकर जला डाला गया और मठीय बौद्ध धर्म को मिटा दिया गया।

जब मुसलमान आक्रमण से भिक्षुओं का विनाश हो गया तो सामान्य जनता किंकर्त्तव्य–विमूढ हो गयी, वह या तो मुस्लिम हो गयी या हिन्दूओं में समा गयी। यथार्थ में ''तुर्को के जो आक्रमण दसवीं सदी के अंत में भारत पर प्रारम्भ हो गए थे, उन्होंने इस देश की व्यवस्था और शांति पर कठोर कुठाराघात किया था। इन नए प्रकार के मलेच्छों व यवनों के आक्रमणों से भारत की जीवन–शक्ति निर्बल पड़ गई थी और मगध के महाविहार भी देर तक अपनी सत्ता को कायम रखने में असमर्थ रहे थे। इसमें संदेह नहीं कि मगध और भारत के अन्य प्रदेशों के बौद्ध भिक्षुओं ने चीन जाकर वहाँ बौद्ध धर्म भारतीय भाषा, सभ्यता, कला और संस्कृति के प्रचार के लिए जो अनुपम कार्य किया, वह भारत के इतिहास के लिए अत्यंत गौरव की वस्तु है।[10]

बौद्ध धर्म के पतन के प्रमुख कारण

यद्यपि भारत में बौद्ध धर्म का तेजी से विस्तार हुआ और भारत से ही विदेशों में गया, तथापि भारत में बौद्ध धर्म लगभग नष्ट हो गया। इसके निम्नलिखित कारण थे–

बौद्ध संघों में भ्रष्टाचार का प्रवेश

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के उपरान्त । आचार–विचार को शुद्ध रखने के नियम धीरे–धीरे शिथिल हो गए और बौद्ध भिक्षुओं में भ्रष्टाचार उत्पन्न हो गया। अतरू लोग विलासी एवं पाखण्डी भिक्षुओं से घृणा करने लगे।

बौद्धों में तान्त्रिक प्रथाओं की उत्पत्ति

धीरे–धीरे बौद्धों में तन्त्रवाद (जादू–टोने) आदि का प्रवेश हो गया। महात्मा बुद्ध के पिछले जीवन के सम्बन्ध में हजारों व्यर्थ की कथाएँ प्रचलित हो गई। अतः इस धर्म से लोगों का विश्वास उठने लगा।

बौद्धों का दो सम्प्रदायों में विभाजन

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के उपरान्त बौद्ध 'महायान' और 'हीनयान' नामक दो सम्प्रदायों में बँट गए, जिससे इनकी शक्ति घटने लगी। महायान बौद्धों ने मूर्ति–पूजा, योग तथा हिन्दुओं के कई अन्य सिद्धान्त अपना लिए, जिससे बौद्धों और हिन्दुओं में बहुत कम भेदभाव रह गया। धीरे–धीरे महायान बौद्ध हिन्दू धर्म में मिल गए तथा हिन्दुओं ने भी बुद्ध को अवतार मान लिया।[11]

डॉ. अम्बेड़कर भी भारत में बौद्ध धर्म के ह्रास एवं पतन का कारण मुख्य रूप से मुसलमानों के आक्रमण को ही मानते हैं। उनके अनुसार ''इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत में बौद्ध धर्म का पतन मुसलमानों के आक्रमण के कारण हुआ। इस विषय पर विसेन्ट स्मिथ का कथन है, ''मुसलमान आक्रमणकारियों ने अनेक स्थानों पर जो भीषण हत्याकाण्ड किये, वे रूढ़िवादी हिन्दुओं द्वारा किए गए अत्याचारों से कही अधिक प्रबल थे और भारत के कई प्रांतों से बौद्ध धर्म के लुप्त होने के लिए भारी जिम्मेदार हैं।[12]

इस प्रकार सातवीं शताब्दी तक भारत में बौद्ध धर्म की निरन्तर प्रगति होती रही। तत्पश्चात् उसका क्रमिक ह्रास प्रारम्भ हुआ तथा अन्ततोगत्वा बारहवीं शताब्दी तक यह धर्म अपनी मूलभूमि से विलुप्त हो गया। विभिन्न विद्वानों द्वारा बताये गये कुछ अन्य महत्वपूर्ण कारण इस प्रकार है– (1) सातवीं शती का अन्त होते–होते भारत कई छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्यों में बँट गया, जो सदा एक दूसरे से युद्ध करते रहते थे। बौद्ध धर्म को अशोक, कनिष्क एवं हर्ष जैसे समर्थ, प्रभु–सत्तासम्पन्न, उत्साही एवं प्रजावत्सल सम्राटों जैसा अन्य शासकों का आश्रय नहीं प्राप्त हो सका। अब उसे राजकीय आश्रय मिलना असम्भव था, हाँ बंगाल के पालवंशीय राजाओ से कुछ वर्षों तक स्नेह अवश्य मिला, किन्तु बौद्ध धर्म अब ह्रास की ओर उन्मुख हो गया था। (2) बौद्ध धर्म के महान सिद्धान्तों के योग्यतम एवं उद्भट व्याख्यातागण अपने धर्म के प्रचारार्थ इस देश को छोड़कर अन्य देशों में चले गये। डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक 'इण्डिया एण्ड चाइना' में ऐसे 24 महत्वपूर्ण भारतीय विद्वानों का उल्लेख किया है जो बुद्ध के उपदेशों के प्रचारार्थ चीन में तीसरी शती से 973 ई. तक जाते रहे।[13] उन्होंने कुछ ऐसे चीनी विद्वानों का उल्लेख किया है जो बौद्ध धर्म सम्बन्धी पवित्र स्थलों के दर्शनार्थ एवं बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत में आते रहे हैं।

ऊपर से पतन–बौद्ध धर्म भारत में किसी भी काल में एक प्रमुख धर्म के रूप में स्थापित हुआ प्रतीत नहीं होता। यह मुख्यतः नगरीय केन्द्रों तक ही सीमित था जहाँ जनसंख्या का छोटा भाग निवास करता था। विनय और सुत्त पिटक में निवासों का एक सांख्यिकीय अध्ययन यह संकेत करता है कि इसमें 95.37 प्रतिशत संख्या शहरों की थी।[14] उसी तरह जब हम विनय या सुत्तपिटक में वर्णित व्यक्तियों के जन्म स्थानों को आंकड़ों को देखते हैं तो पता चलता है कि 54.34 प्रतिशत लोग केवल 6 मुख्य नगरीय केन्द्रों–वाराणसी, श्रावस्ती, राजगृह, कपिलवस्तु, वैशाली और मिथिला से संबंधित थे।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः आज बौद्ध धर्म अनेक दूरवर्ती देशों में फैला हुआ है और जिसके अनुयायियों की संख्या विश्व में चौथे स्थान पर है किन्तु भारत में अधिकांश अन्य धर्म वालों से बहुत कम हो गयी है। अपने आरम्भिक दौर से ही बौद्ध धर्म राजाओं, धनी व्यक्तियों और नौकरशाहों में लोकप्रिय था। ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्ध धर्म के नगरीय और अभिजात्य वर्गीय चरित्र ने उसे आम जनता से अलग रखा। इसके ऐसे स्वरूप के कारण इसकी कठिनाईयाँ और भी बढ़ गयी होगी जब नगरीकरण का पतन होने लगा। बौद्ध धर्म जिसने बढ़ते शहरीकरण को वैचारिक अधिरचना प्रदान की और अपनी पुष्टि व विकास के लिए उस पर अधिकतर निर्भर रहा, अन्ततः पतन में उसी का शिकार बन गया होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जोषी, एल.एम., स्टडीज इन द बुद्धिस्ट कल्चर ऑफ इंडिया, पृ. 302*
2. *बागची, पी.सी., डिक्लाइन ऑफ बुद्धिज्म एण्ड इट्स कॉज, पृ. 412*
3. *कॉज, ई., ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ बुद्धिज्म, पृ. 86*
4. *काणे, पी.वी., हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र, भाग–2, पृ. 1003*
5. *डेविड्स, टी. डब्ल्यू. राइज, दि रिलेशंस बिटवीन अर्ली बुद्धिज्म एण्ड ब्रह्मणिज्म, जिल्द 10, पृ. 274–86*
6. *प्रसाद, हरकिशोर, पुष्यमित्र शुँग एण्ड बुद्धिस्ट्स, जिल्द 40, पृ. 29–30*
7. *डेविड्स, राइज, बुद्धिस्ट इंडिया, पृ. 318–320*
8. *एलियट, सी., हिन्दुज्म एण्ड बुद्धिज्म, भाग–2, पृ. 6*
9. *एलियट, एच.एम., हिस्ट्री ऑफ इंडिया, जिल्द 2, पृ. 306*
10. *सांकृत्यायन, राहुल, बौद्ध संस्कृति, पृ. 34*
11. *गोखले, बी.जी., द अर्ली बुद्धिस्ट एंड द अरबन रिवोल्युशन, वाल्यूम–5, पृ. 7–22*
12. *स्मिथ, विसेन्ट, अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ. 419–420*
13. *राधाकृष्णन, इण्डिया एण्ड चाइना, पृ. 27*
14. *सराओ, के.टी.एस., प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म : उद्भव, स्वरूप एवं पतन, पृ. 44*